MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Issue-18, Vol-02, April to June 2017

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal

Editor
Dr Bapu G. Gholap

www.vidyawarta.com

Scanned with CamScanner

31) 'फेन नदी का कवि' : केदारनाथ अग्रवाल
संतोष साहेबराव नागरे, बीड़ || 120

32) नीले घोड़े का सवार — नरेन्द्र मोहन की कविता में चित्रित त्रासदी
सहा.प्रा.सौ.संजीवनी संदीप पाटील, कोल्हापूर || 122

33) हिंदी दलित साहित्य : दर्द का दस्तावेज
डॉ. सौ. पतकी प्रतिज्ञा प्रमोद, श्रीरामपूर || 130

34) डॉ. शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में वर्ग—संघर्ष
डॉ. प्रतिज्ञा प्रमोद पतकी, जि.अहमदनगर || 132

35) पिछोरा अंकन में घोड़ों की कलात्मक चित्राकृतियों का महत्व
डॉ. लक्ष्मी श्रीवास्तव, (म.प्र.) || 134

36) शमशेर बहादुर सिंह की काव्य दृष्टि
प्रो. रणजीत कुमार सिन्हा, पश्चिम मिदनापुर || 137

37) महादेवी वर्मा की दृष्टि में स्त्री
सुमन, दिल्ली विश्वविद्यालय || 139

38) हिन्दी साहित्य को स्त्री उपन्यासकारों की देन
डॉ. हेमलता, तेलंगाना || 144

39) मिथक चिंतन : मिथक के प्रकार
डॉ. माधुरी पाण्डेय गर्ग, कटनी (म.प्र.) || 146

40) झाँसी दुर्ग का सामरिक महत्व
डॉ. भोला नाथ उपाध्याय,जालौन (उ.प्र.) || 151

41) राँगेय राघव कृत 'कब तक पुकारूँ' में द्वन्द्व के विविध रूप
ब्रजराज यादव, उ.प्र. || 156

42) मुस्लिम तलाकशुदा एवं परित्यक्त महिलाओं की समस्याएं एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
डॉ. अंबू वाजपेयी, हरिद्वार || 160

43) जटिल रोगों के उपचार प्रबंधन में प्राकृतिक रसायनों के रूप में भारतीय मसालों की उपयोगिता
डॉ. रामेश्वर सोनी, उज्जैन || 167

44) चिकित्सा विज्ञान व घरेलू उपचार : थारू जनजाति के विशेष संदर्भ में
प्रेमा जोशी, अल्मोड़ा || 171

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

Scanned with CamScanner

भी बताते है उदाहरण के लिए: जनसंख्या की समस्या, सड़क सुरक्षा दहेज तथा अशिक्षा आदि।

निष्कर्ष:

अतः विज्ञापन एक उपभोक्ता को बाजार में उपलब्ध वस्तुओं के चुनाव में सहायक होते हैं। दूसरा, विज्ञापन भावी उपभोक्ताओं को उत्पाद को खरीदने या सामाजिक कारणों को प्रेरित करने की सूचनाएं देने का एक औजार भी होते है। तीसरा विज्ञापन खुले प्रचार का एक अभिन्न अंग है। वस्तुओं तथा सेवाओं की सिफारिश करने वाले वैध अधिकारों पर कोई भी प्रतिबंध, बोलने की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकारों को नष्ट करती है। चौथा, विज्ञापन बचत, निवेश उत्पादन तथा रोजगार के द्वारा आर्थिक विकास में भी योगदान देते है। पांचवा, विज्ञापन विपणन में भी सहायता करता है।

सन्दर्भ सूची :–

(i) डॉ. आर.सी. भाटिया : विपणन सम्प्रेषण विक्रय एवं विज्ञापन कला

(ii) डॉ. अस्थाना एवं उपाध्याय : व्यवसायिक संगठन, प्रबन्ध एवं प्रशासन विज्ञापन

(iii) Engel James F : Consumer Behaviour

(iv) David N. Blank : Some Comments on the Role of Advertising.

(v) Bilkey W.J. : A Phycholigical Approval to Consumer Behaviour Analysis

❑❑❑

31

'केन नदी का कवि' : केदारनाथ अग्रवाल

संतोष साहेबराव नागरे
सहा.प्रा.हिन्दी विभाग, र.भ.अट्टल महाविद्यालय,
गेवराई जि.बीड।

****

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्षस्थ कवि हैं। सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नागार्जुन, त्रिलोचन, डॉ.रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध आदि प्रगतिशील कविता के मुख्य कवि है। प्रकृति सौंदर्य की दृष्टि से आधुनिक हिन्दी कविता में प्रगतिशील कविता का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रगतिशील काव्यधारा में नागार्जुन ने मिथिला, त्रिलोचन एवं डॉ.रामविलास शर्मा ने अवध तो केदारनाथ अग्रवाल ने बुन्देलखण्ड की प्रकृति का सुंदर चित्रण अपनी रचनाओं में किया है। केदारनाथ अग्रवाल बुन्देलखण्ड की प्रकृति सौन्दर्य के अनुपम कवि है। बुन्देलखण्ड की प्रकृति, वहाँ का जन-जीवन उनकी रचनाओं में रचा-बसा है। बुन्देलखण्ड की उबड-खाबड जमीन, नन टुनटुनिया पहाडी, केन नदी का कल-कल निनाद, कडी धूप, पेड, पौधे, फूल, धूल, सूरज की किरणें, लहलहाती फसलें, ठंडी हवाएं केदार जी को लिखने के लिए प्रेरित करते रहे हैं। केदार के प्राकृतिक परिवेश का अपरिहार्य घटक है केन या कर्णवती नदी। डॉ.विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार, "केदार ने नदी पर अनेक कविताएँ लिखी है, ज्यादातर केन पर। मेरा अनुमान है कि नदी को इतने रुपों में खडीबोली [illegible]" केदार जी को केन नदी इतनी प्रिय है की वे अपने अस्तित्व में उसका अस्तित्व जीते हैं। इस सन्दर्भ में डॉ. बच्चनसिंह ठीक ही कहते हैं, - "केन नदी तो उसके तन मन में ऐसी रची बसी है, जैसे पीपल के पत्तों में फैली हुई नसें।" केदार जी के काव्य में केन नदी के विभिन्न रुप देखने को मिलते हैं। केन नदी कवि केदार जी को अपने समय और समाज के साथ अभिन्न रुप से जुडने में मदद करती है। नरेन्द्र पुण्डरीक इस सन्दर्भ में कहते हैं,- " 'केन' को केदारनाथ अग्रवाल ने विभिन्न तरह से देखा, यह देखना मात्र नदी को देखना नहीं था, बल्कि समय और समाज को भी देखना था, जिनके बीच नदी बह रही थी।"[3] केन नदी और केदारनाथ अग्रवाल एक दूसरे के पर्याय बन जाने के कारण ही उन्हें 'केन नदी का कवि' भी कहा जाता है।

पानी की गतिशीलता के कारण केदार को नदी प्रिय है। डॉ.खगेन्द्र ठाकुर इस संदर्भ में कहते है,- "कवि को गति से आगे की ओर चलनेवाली गति यानी प्रगति से प्रेम है। गति के प्रवाह में पानी

Scanned with CamScanner

नदी का रुप लेता है, इसलिए कवि को नदी प्यारी है। नदी के भी अनेक रुप कवि ने अंकित किये हैं।"[७] पानी की गतिशिलता तेज धार का रुप लेता है। तेज धार प्रगति के पथ में बाधक चट्टानों को घूँसे मारकर तोडने का काम करता है-

"तेज धार का कर्मठ पानी / चट्टानों के उपर चढकर
मार रहा है घूँसे कसकर / तोड रहा है तट चट्टानी।"[८]

प्रकृति सौन्दर्य का चित्रण करते हुए केदार अपनी जन संवेदना से कभी विमुख नहीं होते। इस सन्दर्भ में भगवत रावत ने ठीक ही कहा है, "केदार की कविताओं में एक ओर मानवीय संघर्ष है, दूसरी ओर प्रकृति सौन्दर्य भी है। जहाँ वे प्रकृति चित्रण करते हैं, उसमें मानवीय संघर्ष दिखाई देता है। यह इनकी कविताओं की एक बहुत बडी विशिष्टता है।"[९] इसीकारण इनकी सौन्दर्य प्रियता छायावाद से पृथक अपना अस्तित्व रखती है। केदार की १९३५ में प्रकाशित 'बैठा हूँ केन किनारे' कविता हिन्दी कविता में नये यथार्थवाद की शुरुआत मानी जाती है। दोनों हाथों में रेती लेकर और रेती पर ही पाँव पसारकर बैठना भद्रजनों के व्यवहार में शामिल नहीं है। केदार इस भद्रव्यवहार के खिलाफ विद्रोह कर रहे हैं-

"बैठा हूँ इस केन किनारे / दोनों हाथों में रेती है
नीचे अगल बगल रेती है / होड राज्यश्री से लेती है
मोद मुझे रेती देती है / रेती पर ही पाँव पसारे / बैठा हूँ इस केन किनारे।"[१०]

केदारनाथ अग्रवाल जी ने केन के माध्यम से संघर्षशील मनुष्य के साथ ही नारी सौन्दर्य एवं प्रेमभाव को वाणी दी है। केदार के काव्य में प्रकृति और नारी सौन्दर्य एक साथ देखने को मिलता है। इस सन्दर्भ में स्वयं केदार कहते हैं, - "मैं सौन्दर्य को व्यापक दृष्टि से देखता हूँ। सौन्दर्य प्रकृति में भी है और नारी में भी। यह तो कवि पर निर्भर है कि वह अपने जीवन में प्रकृति के सौन्दर्य से सम्बध्द हुआ है या नारी के सौन्दर्य से। मेरी रचनाओं में दोनों को समान स्थान मिला है।"[११] केदार को काव्य में केन नदी कभी म्यान से खिंची तलवार, कभी नितम्बिनी वीणा, कभी मायके से आयी दूर देश की बेटी तो कभी एक नौजवान ढीठ लडकी के रुप में आती है। केन नदी को एक नौजवान ढीठ लडकी की उपमा देकर कवि ने नारी सौन्दर्य का सुन्दर चित्रण किया है। केदार जी ने केन नदी के किनारों पर खडे पेडों को नौजवान लडकों की उपमा देते हुए नदी एवं पेडों के माध्यम से प्रेम भाव को व्यक्त किया है-

"नदी एक नौजवान ढीठ लडकी है / जो पहाड से मैदान में आयी है
जिसकी जाँघ खुली / और हँसो से भरी है / जिसने बला की सुन्दरता पायी है।
पेड है कि इसके पास ही रहते हैं / झुकते - झुकते चूमते ही रहते हैं।"[१२]

नदी का जन्म पहाडों में होता है। केदार को बाँदा की केन नदी तथा टुनटुनिया पहाडी शिव एवं पार्वती के सम्बन्धों की याद दिलाती हैं। पहाड एवं नदी के माध्यम से प्रेमभाव को वाणी देते हुए केदार कहते हैं-

"दूर खडा टुनटुनिया पत्थर पास बुलाता / केन नदी की बाँह पकडने को ललचाता
चौमासे में चढी जवानी में मदमाती / केन नदी इठलाती गाती मिलने आती
बम-भोले की पूजा में जल - फूल चढाती / लहरों से पहरों तक मंत्रोच्चार कराती
कर्णवती फिर लौट किनारे पर आ जाती / आँचल में वरदान लिए शिव का लहराती।"[१३]

केन नदी का पानी प्यार का प्रवाहित पानी है। केन की लहरों में प्रेम संगीत है। केन नदी कवि की हमदर्द, हमसाथी, पत्नीप्रिया है। उनकी कविता में नायक चाहे पेड हो, बादल हो, पहाड हो, रेत हो, पंछी हो, धूप हो लेकिन नायिका हमेशा नदी ही रही है। इस सन्दर्भ में अजय तिवारी ने ठीक ही कहा है,- "वे (केदार) खुद पहाड हो या रेत बनें लेकिन पत्नी नदी ही है।"[१४] 'रेत में हूँ - जमुन जल तुम,' 'आज नदी बिलकुल उदास थी,' 'पहाड की गोद में बह रही नदी' 'हे मेरी तुम सोयी सरिता' आदि कविताएँ इसका प्रमाण हैं। केदार जी की 'आज नदी बिलकुल उदास थी' कविता विश्व साहित्य में अनुपम है। प्रस्तुत रचना में नदी नायिका है तो बादल नायक। बादल रुपी नायक ही नदी को जल (सौन्दर्य) देता है। नायिका की उदासी के कारण नायक बिना जल स्पर्श किये दबे पाँव लौट आता है। नायक का दबे पाँव लौटना उसी प्रकार है जैसे कोई सहृदय किसी को सोता देखकर अपने स्वार्थ को भुलकर लौटता है। नायक यहाँ स्वार्थ मुक्त होकर अपने लाभ, चिंता की अपेक्षा नायिका की चिंता अधिक करता है। केदार जी का नायक 'निराला' जी के नायक की तरह उच्छल नहीं है, जो सोयी हुई जुही की कली को झकझोरता है। केदार मर्यादा, संयम एवं शालीनता का विशेष ध्यान रखते हैं। केदार अपनी नायिका रुपी केन नदी की उदासी का चित्रण इसप्रकार करते हैं-

"आज नदी बिलकुल उदास थी / सोयी थी अपने पानी में
उसके दर्पण पर / बादल का वस्त्र पडा था
मैंने उसको नहीं जगाया / दबे पाँव घर वापस आया।"[१५]

केन नदी का पानी प्यार का प्रवाहित पानी है। प्रेम एवं प्रगति केदार जी को प्रिय है। यह गुण नदी में होने के कारण नदी कवि को प्रिय है। केन नदी कवि को जन जीवन के साथ जोडती है। केदार स्वयं कहते है,- "केन मेरी आत्मीय नदी है। मेरे जन जीवन से जुडी नदी है, मैं उसको जनता से, जीवन से जोडकर देखता हूँ, लिखता हूँ।"[१६] जन जीवन के साथ जुडी होने के कारण एवं कवि को समाज के साथ जोडे रखने के कारण केन नदी कवि के आत्म प्रसार की नदी

Scanned with CamScanner

बन गयी है-

"केन है केन ! प्रवाहित प्यार की / मेरी नदी केन
मेरे आत्म - प्रसार की / मेरी नदी केन।"[१४]

सारांश :

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्षस्थ कवि हैं। केदार ने बुन्देलखण्ड की प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है। केदार के प्राकृतिक परिवेश का अपरिहार्य घटक है केन नदी। केन नदी कवि के आत्म-प्रसार की नदी है। केन के माध्यम से कवि ने संघर्षशील मनुष्य, नारी सौन्दर्य एवं प्रेमभाव आदि का विविध रूपों में सशक्त अंकन किया है। केन नदी केदार के काव्य में इसप्रकार रची-बसी है जैसे शरीर में आत्मा। जिन्हें एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता। नागार्जुन ने अपनी 'ओ जन मन के सजग चितेरे' कविता में केदारनाथ अग्रवाल एवं केन नदी को सश्रद्ध याद किया है-

"केन कूल की काली मिट्टी, वह भी तुम हो।
कालिंदर का चौड़ा सीना, वह भी तुम हो।
"मैं बडभागी, तुम जैसे कल्याण मित्र का जिसे सहारा
मैं बडभागी, क्योंकि चार दिन बुन्देलों के साथ रहा हूँ
मैं बडभागी, क्योंकि केन की लहरों में कुछ देर बहा हूँ।"[१५]

संदर्भ ग्रंथ :

१) डॉ.विश्वनाथ त्रिपाठी - पेड का हाथ, पृ.४०
२) डॉ. बच्चनसिंह - हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, पृ.४१६-४१७.
३) सम्पा. विश्वरंजन - बीच का योगी : केदारनाथ अग्रवाल, पृ. ५४
४) सम्पा.अजय तिवारी - केदारनाथ अग्रवाल पृ. १३२.
५) केदारनाथ अग्रवाल - फूल नहीं, रंग बोलते हैं, पृ. ९९.
६) सम्पा. भगवत रावत - जिऊँगा जिन्दगी अभी और अभी और, पृ. १४६.
७) केदारनाथ अग्रवाल - गुलमेंहदी, (नींद के बादल) पृ. १०८.
८) डॉ.रामचंद्र मालवीय - केदार : समीक्षाएँ एवं मूल्यांकन, पृ. १२.
९) केदारनाथ अग्रवाल - फूल नहीं, रंग बोलते हैं, पृ. १२४.
१०) केदारनाथ अग्रवाल - गुलमेंहदी , (लोक और आलोक) पृ. १५१.
११) सम्पा.अजय तिवारी - केदारनाथ अग्रवाल, पृ. ३३.
१२) केदारनाथ अग्रवाल - फूल नहीं, रंग बोलते हैं, पृ. ४९.
१३) सम्पा. भगवत रावत - जिऊँगा जिन्दगी अभी और अभी और, पृ. १८३.
१४) केदारनाथ अग्रवाल - खुली आँखें : खुले डैने, पृ. ४८.
१५) सम्पा. शोभाकान्त मिश्र - नागार्जुन चुनी हुई रचनाएँ भाग २, पृ.११७-११८.

□□□

32

नीले घोड़े का सवार — नरेन्द्र मोहन की कविता में चित्रित त्रासदी

सहा.प्रा.सौ.संजीवनी संदीप पाटील
हिंदी विभाग प्रमुख, कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, गडहिंग्लज कोल्हापूर

****

वर्तमान समय में तेजी से घटित होने वाले परिवर्तन, अर्थ–संबंधों की जटिलता, विज्ञान और तकनीक की क्रांति, मीडिया का प्रचार–प्रसार, राजनैतिक स्वार्थान्धता व संकीर्णता, बाजारीकरण और वैश्वीकरण की नीति, मनुष्य और समाज का मूल्यगत पतन तथा उत्तर आधुनिकता का बढ़ता प्रकोप बदलते हुए युगबोध एवं चिंतन के साथ–साथ आधुनिक और संवेदना का विकास भी रेखांकित करता है। समाज एवं युगबोध में आने वाले संकट बदलाव तथा उत्कर्ष–अपकर्ष से ही तत्कालीन साहित्य–संवेदना निर्मित होती है। कहीं प्रत्यक्ष रूप से तो कहीं अप्रत्यक्ष रूप से। साथ ही साहित्य–संवेदना समाज और मनुष्य को नई दिशाओं की तरफ उन्मुख करती है, नए आलोकित पथ को भी दिखाती है।

लंबी कविता की परम्परा

हिंदी साहित्य में लंबी कविता की महान परंपरा है। "हिंदी लंबी कविता का आरंभ सुमित्रानंदन i a d h "i fjorZu" ! selukt k k g&i' जो 'पल्लव' (कविता संग्रह) में छपी थी। उसके बाद जयशंकर प्रसाद की 'प्रलय की छाया' जो १९३३ में 'लहर' कविता संग्रह में छपी। निराला जी की 'राम की शक्तिपूजा' १९३९ में 'अनामिका' कविता संग्रह में छपी। प्रारंभ में लंबी कविताएं महाकाव्यात्मक अपेक्षाओं में संबद्ध होकर (प्रलय की छाया, राम की शक्तिपूजा) आख्यान या इतिवृत्त का सहारा लेकर उदित हुई थी। 'पंत की 'परिवर्तन' यह लंबी कविता प्रारंभिक दौर की ऐसी कविता है जो किसी आख्यान या इतिहास का

Scanned with CamScanner